अंतर्राष्टीय जैवविविधता दिवस- 2026 के अवसर पर एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन पर रिपोर्ट

Report on organizing a one-day workshop on the occasion of International Day for Biodiversity - 2026.

अंतर्राष्टीय जैवविविधता दिवस- 2026 के अवसर पर भा वा अ शि प - हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला हिमाचल प्रदेश वन विभाग व पर्यावरण विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी एवं जलवायु परिवर्तन विभाग के संयुक्त तत्वावधान से एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन एलिसियम होटल, टुटीकंडी, शिमला में किया गया। कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य उत्तर-पश्चिम हिमालय की जैवविविधता के संरक्षण में आ रही विभिन्न चुनौतियों, समस्याओं और भविष्य में हिमालयन जैवविविधता का सतत विकास व संरक्षण पर चर्चा करना था ।

डॉ. मनीषा थपलियाल, निदेशक हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान ने अपने सम्बोधन में बताया कि किस प्रकार हिमालयी जैवविविधता के संरक्षण से हम लोगों को आजीविका के अवसर प्रदान कर सकते हैं। जिसमें इको-टूरिज्म, कृषि-वानिकी अहम भूमिका निभा सकते हैं। उन्होंने 'प्रकृति कार्यक्रम' पर चर्चा करते हुए बताया कि इस कार्यक्रम के माध्यम से स्कूल के बच्चों, वैज्ञानिक व स्थानीय लोगों के सहयोग से प्रकृति के संरक्षण पर कार्य किया जा रहा है। डॉ. थपलियाल ने बताया कि हिमाचल प्रदेश के परिपेक्ष में जैव विविधता के संरक्षण में प्रमुख चुनौतियाँ पर्यावास विखंडन और विनाश, जलवायु परिवर्तन, आक्रामक प्रजातियाँ, मानव-वन्यजीव संघर्ष और जैवविविधता का अतिदोहन हैं। हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान ने हिमालयी जैवविविधता पर अनेक अनुसंधान किए हैं और अनेक उत्पाद भी तैयार किए हैं जैसे नर्सरियों में पौधों की गुणवत्ता के लिए मृदा संजीवनी खाद, जैव कीटनाशक उत्पाद, हिम बायोकिल-I और हिम-अल्बीवाश शामिल हैं। हिमालयी जैवविविधता न केवल पारिस्थितिकी संतुलन में मदद करती है,अपितु लोगों को विभिन्न संसाधनों के माध्यम से रोज़गार के अवसर भी प्रदान करती है ।

डॉ. स्वर्णलता, वैज्ञानिक एवं प्रभाग प्रमुख, सिल्वीकल्चर, हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला ने हिमाचल प्रदेश की जैवविविधता का सतत विकास व संरक्षण करके विश्व की जैवविविधता का संरक्षण करने पर चर्चा की । उन्होंने वैश्विक भविष्य के लिए स्थानीय स्तर पर कार्य की आवश्यकता पर बल दिया उन्होंने जैव विविधता की हिमालयी क्षेत्रों एवं हिमाचल प्रदेश में वर्तमान स्थिति के बारे में चर्चा की । उन्होने कहा कि यदि हम स्थानीय स्तर पर अपनी जैवविविधता का संरक्षण करते हैं तो हम कहीं न कहीं वैश्विक जैवविविधता के संरक्षण में अवश्य सहयोग करते हैं उन्होंने विश्व, देश और राज्य स्तर पर जैवविविधता के महत्व और आंकडों पर अपनी बात रखी । उन्होंने कहा कि जैव विविधता का 8% भारत में उपस्थित है उन्होंने संस्थान द्वारा विकसित औषधीय पौधों की प्रजातियां उत्पादों और नर्सरी तकनीकों के बारे में जानकारी दी संस्थान द्वारा तैयार एक वानिकी रिहैबिलिटेशन मॉडल और पोर्टल हिल शिमला में वन विभाग के सहयोग से तैयार किए गए वानस्पतिक वाटिका (arboretum) के बारे में भी जानकारी दी ।

डॉ. पुष्पेंद्र राणा, निदेशक, पर्यावरण विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी एवं जलवायु परिवर्तन विभाग ने अपने संबोधन में विभाग द्वारा 10 वर्षीय कार्ययोजना तैयार किए जाने की प्रमुख जानकारी सांझा की । जिसमें विलुप्त और अन्य प्रजातियों के संरक्षण को और महत्व दिया जा रहा है।

कार्यशाला के सम्मानित अतिथि (Guest of Honour), श्री सुशील कुमार सिंगला ने जैवविविधता और उसके महत्व पर अपने विचार रखे, जिसमें उन्होंने बताया कि भारत विश्व के 17 मेगा जैव विविधता प्रधान देशों में से एक है और हिमाचल प्रदेश भारतीय हिमालयी क्षेत्रों का प्रमुख और सबसे बड़ा राज्य होने के कारण एक महत्वपूर्ण जैव विविधता हॉट स्पॉट है और प्रदेश अपनी जैव विविधता को संरक्षित करने में प्रयासरत है।

डॉ. मुरारी लाल ठाकुर, विशेषज्ञ जैवविविधता बोर्ड, शिमला ने भी हिमाचल प्रदेश के जैवविविधता के महत्ता पर चर्चा की। उन्होंने हर्बल और पौष्टिक औषधीय क्षेत्र के महत्व के बारे में बताया । उन्होंने औषधीय पौधों की खेती के महत्व पर बल दिया और कहा कि इससे वनों के ऊपर निर्भरता और दबाव कम होगा उन्होंने कहा कि हिमाचल 500 - 800 करोड़ के औषधीय पौधों का उत्पादन करता है । उन्होंने औषधीय पौधों की खेती, मधुमक्खी पालन, मत्स्य पालन आदि क्षेत्रों की संभावना के ऊपर चर्चा की । अभिलाष दामोदरन, मुख्य अरण्यपाल(प्रशासन) ने अपने सम्बोधन में कहा कि वन विभाग पौधरोपण कार्यक्रमों के माध्यम से वनों और जैवविविधता के संरक्षण के लिए कार्य कर रहे हैं। परन्तु हमें "Ecosystem based plantation approach" (पारिस्थितिक तंत्र आधारित पौधरोपण) दृष्टिकोण पर अधिक कार्य करना चाहिए।

इस अवसर पर हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला के वैज्ञानिकों, वन विभाग के अधिकारीगण जिनमें आलोक नागर मुख्य कार्यकारी अधिकारी CAMPA (कैम्पा), ने भी अपने अनुभव साझा किए । कार्यक्रम में लगभग 35 लोगों ने भाग लिया । इस अवसर पर सम्मानित सदस्य श्री सुशील कुमार सिंगला, सचिव पर्यावरण विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी एवं जलवायु परिवर्तन विभाग, हिमाचल प्रदेश सरकार, वन विभाग के सेवानिवृत वरिष्ठ अधिकारी, श्री एस. एस. नेगी (भूतपूर्व वन बल प्रमुख), श्री सुशील श्रीवास्तव (भूतपूर्व वन बल प्रमुख), श्री विनीत कुमार (भूतपूर्व प्रधान मुख्य वन संरक्षक), श्री अनिल ठाकुर (भूतपूर्व अतिरिक्त प्रधान मुख्य वन संरक्षक), श्री के. थिरुमल (मुख्य अरण्यपाल, शिमला), श्री अभिलाष दामोदरन (मुख्य अरण्यपाल, प्रशासन एवं मानव संसाधन विकास) तथा वन विभाग के अन्य वरिष्ठ अधिकारीगण मौजूद रहे।

On the occasion of International Day for Biological Diversity–2026, a one-day workshop was organized jointly by ICFRE-Himalayan Forest Research Institute, the Himachal Pradesh Forest Department, and the Department of Environment, Science & Technology and Climate Change at Elysium Hotel. The main objective of the workshop was to discuss the various challenges and issues related to the conservation of biodiversity in the North-Western Himalayas, and to deliberate on the sustainable development and conservation of Himalayan biodiversity in the future.

Dr. Manisha Thapliyal, Director of the Himalayan Forest Research Institute, stated in her address that the conservation of Himalayan biodiversity can provide livelihood opportunities to local communities, where eco-tourism and agroforestry can play a significant role. Discussing the “Prakriti Programme,” she explained that the programme promotes nature conservation through the collaboration of school children, scientists, and local communities. Dr. Thapliyal highlighted that the major challenges to biodiversity conservation in Himachal Pradesh include habitat fragmentation and destruction, climate change, invasive species, human-wildlife conflict, and overexploitation of biodiversity. She further informed that the institute has conducted extensive research on Himalayan biodiversity and developed several products, including “Mrida Sanjeevani” compost for improving nursery plant quality, bio-pesticide products, Him Biokill-I, and Him-Albiwash. She emphasized that Himalayan biodiversity not only helps maintain ecological balance but also provides employment opportunities through various natural resources.

Dr. Swarnlata, Scientist and Head of the Silviculture Division at the Himalayan Forest Research Institute, Shimla, discussed how sustainable development and conservation of Himachal Pradesh’s biodiversity can contribute to the conservation of global biodiversity. She stressed the need for local action to secure the global future and elaborated on the current status of biodiversity in the Himalayan regions and Himachal Pradesh. She stated that protecting biodiversity at the local level ultimately contributes to global biodiversity conservation. She also shared statistics and insights regarding the importance of biodiversity at the global, national, and state levels, mentioning that India harbours nearly 8% of the world’s biodiversity. She further provided information about the medicinal plant species, products, and nursery technologies developed by the institute. She also highlighted the forestry rehabilitation model developed by the institute and the arboretum established at Potter Hill, Shimla, in collaboration with the Forest Department.

Dr. Pushpendra Rana, Director of the Department of Environment, Science & Technology and Climate Change, shared important information regarding the preparation of a 10-year action plan by the department, which gives greater emphasis to the conservation of endangered and other important species.

The Guest of Honour, Sushil Kumar Singla, expressed his views on biodiversity and its significance. He stated that India is one of the world’s 17 mega-biodiverse countries, and Himachal Pradesh, being the largest and most significant state in the Indian Himalayan region, is an important biodiversity hotspot actively working towards biodiversity conservation.

Dr. Murari Lal Thakur, Expert, Biodiversity Board, Shimla, also discussed the importance of biodiversity in Himachal Pradesh. He elaborated on the significance of the herbal and nutraceutical medicinal sector and emphasized the importance of cultivating medicinal plants, stating that it would reduce dependency and pressure on forests. He mentioned that Himachal Pradesh produces medicinal plants worth approximately ₹500–800 crore. He also discussed the potential of medicinal plant cultivation, beekeeping, fisheries, and related sectors.

Abhilash Damodaran, Chief Conservator of Forests (Administration), stated in his address that the Forest Department is working towards the conservation of forests and biodiversity through plantation programmes. However, he stressed the need to focus more on an “ecosystem-based plantation approach.”

On this occasion, scientists from the Himalayan Forest Research Institute, Shimla, and officers from the Forest Department, including Sh. Alok Nagar, Chief Executive Officer, CAMPA, also shared their experiences. Around 35 participants attended the programme. Distinguished dignitaries present during the event included Sh. Sushil Kumar Singla, retired senior forest officials Sh. S. S. Negi (Ex HoFF), Sh. Sushil Srivastava (Ex HoFF), Sh. Vineet Kumar (Ex PCCF), Sh. Anil Thakur (Ex APCCF), Sh. K. Thirumal (CCF), Sh. Abhilash Damodaran (CCF), along with other senior officers of the Forest Department.

कार्यक्रम की झलकियाँ

A WORKSHOP
INTERNATIONAL DAY
FOR
BIOLOGICAL DIVERSITY-2026
Theme:

मीडिया कवरेज़

हिमाचल दस्तक

टूटीकंडी में अंतराष्ट्रीय जैवविविधता दिवस पर कार्यशाला का आयोजन

शिमला।अंतरराष्ट्रीय जैवविविधता दिवस के अवसर पर हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान हिमाचल प्रदेश वन विभाग व पर्यावरण विज्ञान एवं तकनीकी एवं जलवायु परिवर्तन के संयुक्त तत्वावधान से एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन एलिसियम होटल टूटीकंडी शिमला में आयोजित किया गया। कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य उत्तर-पश्चिम हिमालय की जैवविविधता के संरक्षण में आ रही विभिन्न चुनौतियों, समस्याओं और भविष्य में हिमालयन जैवविविधता का सतत विकास व संरक्षण करने पर चर्चा की। कार्यशाला में डॉ. स्वर्णलता वैज्ञानिक एवं हैड सिल्वीकल्चर मंडल,हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान शिमला ने हिमाचल प्रदेश की जैवविविधता का सतत विकास व संरक्षण करके विश्व की जैवविविधता का संरक्षण करने पर चर्चा की गई। उन्होंने कहा कि यदि हम स्थानीय स्तर पर अपनी जैवविविधता का संरक्षण करते है तो हम कहीं न कहीं वैश्विक जैवविविधता के संरक्षण में अवश्य सहायता करते है उन्होंने विश्व,देश और राज्य स्तर पर जैवविविधता के महत्व और आंकडों पर अपनी बात रखी। इस अवसर पर भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद-हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान के निदेशक डॉ. मनीषा थपलियाल ने अपने सम्बोधन में बताया कि किस प्रकार हिमालयी जैवविविधता के संरक्षण से हम लोगों को आजीविका के अवसर प्रदान कर सकते हैं।

पंजाब केसरी

अंतर्राष्ट्रीय जैव विविधता दिवस पर कार्यशाला आयोजित

शिमला, 22 मई (ब्यूरो): हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान की निदेशक डा. मनीषा थपलियाल ने अपने संबोधन में ओपन डाटा प्लेटफॉर्म के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि स्थानीय स्तर पर किए जाने वाले संरक्षण प्रयासों का वैश्विक स्तर पर भी बड़ा महत्व है। यह बात उन्होंने शुक्रवार को संस्थान में अंतर्राष्ट्रीय जैव विविधता दिवस के अवसर पर पर्यावरण विज्ञान, प्रौद्योगिकी एवं जलवायु परिवर्तन विभाग हिमाचल प्रदेश तथा वन विभाग हिमाचल प्रदेश के साथ संयुक्त रूप से एक कार्यशाला को संबोधित करते हुए कही। कार्यशाला का उद्देश्य उत्तर-पश्चिमी हिमालय में जैव विविधता संरक्षण से जुड़ी चुनौतियों पर चर्चा कर उनका सार्थक समाधान तलाशना रहा।

इस मौके पर आई.एफ.एस. अधिकारी पुष्पेंद्र राणा ने हिमाचल प्रदेश जैव विविधता बोर्ड द्वारा जैव विविधता संरक्षण के लिए किए जा रहे कार्यों और बायोडायवर्सिटी रजिस्टर संबंधी जानकारी सांझा की। वहीं डा. स्वर्ण लता ने हिमाचल प्रदेश के सतत विकास के लिए जैव विविधता संरक्षण की आवश्यकता पर जोर दिया।

शिमला : हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान द्वारा अंतर्राष्ट्रीय जैव विविधता दिवस पर आयोजित कार्यशाला में भाग लेते प्रतिभागी। (नरेश)

****